Seventeenth Loksabha

>

Title: Need to set up a committee to report on the existing information relating to Indian History, Philosophy and cultural values in our textbooks-laid.

कुँवर पुष्पेन्द्र सिंह चन्देल (हमीरपुर): सबसे पहले तो मैं सरकार को नई शिक्षा नीति लाने के लिए विशेष आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जो कि भारतीय मूल्यों और दर्शन को शिक्षा में समावेश करने वाली है। इस नई नीति के माध्यम से छात्रों के दृष्टिकोण में निश्चित रूप से प्राचीन भारतीय संस्कृति और दर्शन के अनुरूप बदलाव आएगा, जो कि नए भारत और विश्व की आकांक्षाओं को पूरा करने वाला होगा। माननीय प्रधान मंत्री जी भी समय-समय पर विभिन्न संवाद माध्यमों से इन भारतीय मूल्यों को हमारे समक्ष प्रकट करते रहते हैं, जिसका सकारात्मक प्रभाव पूरे देश के मानस पर होता है, परन्तु इस भारतीय दर्शन, संस्कृत भाषा,संस्कृति और इतिहास के बारे में अनेक भ्रांतियां व्याप्त हैं और जो संस्थागत रूप लिए हैं तथा जिसका अनुसरण हमारे भारतीय मनीषी भी कर रहे हैं। परिणामस्वरूप विसंगतियों से युक्त ज्ञान हम सभी को उपलब्ध है, जिसकी समीक्षा किए जाने की नितांत आवश्यकता है।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति, संस्कृत भाषा और प्राचीन भारतीय दर्शन से सम्बंधित ज्ञान इंडोलोजी, फोनोलोजी इत्यादि ज्ञान की विधाओं के विशेष क्षेत्र हैं और इन विषयों पर अनुसन्धान और विश्लेषण होते रहते हैं। परन्तु इन विधाओं के माध्यम से उपलब्ध ज्ञान की प्रामाणिकता संदिग्ध है। इन विधाओं में प्राचीन भारत के संबंध में उपनिवेश काल से ही पूर्वाग्रह, अतार्किक दृष्टिकोण और विशेष धर्म की मान्यताओं के अनुरूप ही विश्लेषण किया जाता रहा है, जिससे भारतीय संस्कृति की प्राचीनता एवं उसका सही चित्रण उद्घाटित नहीं हो पा रहा है। आर्यों का विदेशी होना, संस्कृत का सभी भाषाओं की जननी न होना, वेदों का निरर्थक और सामान्य कर्मकांडी होना तथा भारतीय इतिहास का 4000 वर्ष से पुराना न होना इत्यादि प्रचलित मान्यतायें हैं, जो पूर्णतया भ्रामक हैं, और अप्रामाणिक हैं। इन सभी के विपरीत प्रमाण भारतीय वांग्मय और भारतीय विद्वानों के अथक प्रयासों के द्वारा उपलब्ध कराए गए हैं, परन्तु इंडोलॉजी, फोनोलॉजी इत्यादि ज्ञान की विधाओं के द्वारा स्थापित सिद्धांत ही वर्तमान में मान्य हैं। इसके साथ NECRT की इतिहास की विभिन्न कक्षाओं की पुस्तकों में उल्लिखित पाठ्य सामग्रियों में और वेदों में वर्णित जानकारियों में विरोधाभास है। इन विसंगतियों को दूर करना बहुत जरूरी है। कुछ आपतियां इस प्रकार हैं:-

कक्षा 6 की इतिहास की पुस्तक में पृष्ठ 4 पर उल्लेखित है कि भरत नाम का प्रयोग उत्तर पश्चिम में रहने वाले लोगो के लिए किया जाता था, परन्तु ऋग्वेद में भरत शब्द है और इसको क्रिया के रूप में लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है - धारण करना। देश का नाम जिस शब्द पर पड़ा है उसके सन्दर्भ में भ्रामक तथ्य को पढ़ाया जाना शोचनीय है।

कक्षा 6 की इतिहास की पुस्तक में पृष्ठ 72 पर यह बताया गया है कि बुद्ध काल में वर्ण व्यवस्था का निर्माण किया गया था, जबकि वर्ण व्यवस्था वैदिकोत्तर न हो कर वैदिक कालीन है और इसका उल्लेख वेदों में हुआ है। इसी तरह की अनेक विसंगतियां हैं, जिनका निराकरण करना अत्यन्त आवश्यक है और पूर्व में भी मेरे द्वारा मंत्रालय को कई बार अवगत कराया गया है।

अत: पुन: मैं भारत सरकार से यह अनुरोध करता हूँ कि सभी विरोधाभासी तथ्यों की समीक्षा के लिए एक जाँच कमेटी का निर्माण किया जाए, जिससे भारत का इतिहास, दर्शन और सांस्कृतिक मूल्यों को सभी के सामने सही रूप में लाया जा सके, जिससे नए भारत का निर्माण निश्चित रूप से सुनिश्चित हो सकेगा।